Indian Streams Research Journal
Volume 2, Issue. 6, July 2012
ISSN:-2230-7850

Available online at www.isrj.net

ORIGINAL ARTICLE

दलित आत्मकथा एक सामाजिक दस्तावेज

प्रा.भोसले दत्तात्र्य रामचंद्र

रयत शिक्षण संस्था का, श्रीपतराव कदम महाविद्यालय, शिरवल,
जि.सातारा, राज्य- महाराष्ट्र, देश - भारत
email- dattabhosale9@gmail.com

प्रस्तावना :—

भारतीय समाजव्यवस्था में परंपरा से ही दोहरी विषम नीति अपनायी गयी | "हमारा 'पवित्र' सामाजिकधार्मिक ढाँचा ऐसा है कि ज्ञानार्जन को उत्सुक शम्बुक जैसे लोगों का राम द्वारा वध किया जाना उचित ठहराया जाता है द्रोणाचार्य द्वारा अर्जुन को श्रेष्ठ सावित करने के फेर में एकलव्य का अँगुठा कटवाना भी तात्कालिक समाज के हित में हुआ आवश्यक कार्य माना जाता है | 'मनुस्मृति' जैसे ग्रन्थ तो घोर शुद्र विरोधी है |"[१] दलित साहित्य की निर्मिति महात्मा जोतिवा फुले राजर्षी शाहू महाराज और डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर जी की वैचारिक प्रेरणा से हुई है |"आधुनिक दलित साहित्य हिन्दी के नार्थ सिद्ध साहित्य मध्यकालीन निर्गुण संत रैदास सेना कबीर आदि से प्रेरणा लेकर आगे बढा | जो १८ १९ वी शताब्दी के समाजसुधार आन्दोलन के कारण दलितों ने वर्ण व्यवस्था जतिभेद अन्यार्य अत्याचार के विरूध्द आवाज उठाई | रामस्वामी पेरियार ज्योतिवा फुले शाहू महाराज डॉ.बाबासाहेब आंबेड़कर ने दलितों को संघर्ष की प्रेरणा और शक्ति प्रदान की है |"[२]

"दलित मूल निवासी समाज के पास बुध्द चार्वाक कबीर रविदास जोतिवा अछूतानंद पेरियार रामास्वामी गाँधी और डॉ.बाबासाहेब आंबेड़कर की एक समृध्द परंपरा रही है जिन्होंने पिछड़े दलित समाज को गहराई तक प्रभावित किया है | उन्होंने किसी निश्चित रूप में तो नहीं बल्कि साहित्य के अलग-अलग माध्यमों द्वारा अपने विचारों की अभिव्यक्ति की है | इन विचारों की अभिव्यक्ति के सार्थसाथ उन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन की झलक कहीं प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से दे ही दी है |"[३]

अंग्रेजों के शासन काल में महात्मा फुले जी ने पुना में सन १९५४ में दलितों के लिए पाठशाला शुरू की| यह भारत में दलितों के लिए खोली गई प्रथम पाठशाला है | यही से ही दलितों की शिक्षा शुरू हो जाती है | कोल्हापुर के राजा शाहूजी महाराज ने अपने राज्य में दलितों की शिक्षा-दिक्षा के लिए विशेष प्रयास किये|

स्वातंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय राज्यघटना ने सर्वांगपूर्ण सामाजिक समता का स्वीकार किया गया | भारतीय राज्यघटना ने सर्वसामान्य व्यक्ति को केंन्द्र में माना | शिक्षित दलित युवकों ने दलित साहित्य का निर्मिति की| "साहित्य में दलित उपेक्षित, शोषित, पीडित मानव की असहाय दशा का चित्रण विविध रूप से किया जाता है..."[४]

स्वातंत्रता पूर्व काल में राजेशाही शासन काल में सिर्फ राजा या राजदरबार के लिए ही साहित्य निर्मित होता रहा | स्वातंत्रयोत्तर काल में आम आदमी का साहित्य लिखा जाने लगा | दलित साहित्य में जाति-व्यवस्था को नष्ट करके करूणा वेदना की समाजशास्त्रीय दृष्टिकोन से व्याख्या की गई | इसकी सही मायने से शुरूवात महाराष्ट्र में हुई | सन १९२० से आजतक दलित साहित्य का प्रचार प्रसार गतिशील रहा | सन १९२० में डॉ. बाबासाहेब आंबेड़कर जी ने 'मुकनायक' वृत्तपत्र की शुरूवात की | दलितों के शोषण की व्यथाएँ वेदानाएँ इसमें दर्ज की गई |डॉ.बाबासाहेब आंबेड़कर की विचारधारा न्याय स्वातंत्रय समता और बंधुता इन मानवी मुल्यों का स्वीकार करती है| दलित साहित्य का उद्देश मानवी मूल्यों की संरक्षा एवम् मानवतावाद पर आधारित मानवी मुलभूत आधिकार की संरक्षा है | और यह साहित्य वैश्विक सामाजिक समता एवम्मानवी न्याय हक्क की प्रेरणा एवम्चेतना देता है | दलित साहित्य का आदर्शवाद डॉ.बाबासाहेब आंबेड़कर जी के तत्वज्ञान पर आधारित है | दलित साहित्य का उद्देश सामाजिक विषमता को नष्ट करना और सामाजिक समता का निर्माण करना है | दलित साहित्य जातिप्रथा को नष्ट करके मानवतावाद की समाजशास्त्रीय दृष्टिकोन से व्याख्या करता है |

"डॉ. बाबासाहब अंबेडकर एक युग पुरूष थे | दलित समाज से आने के कारण न सिर्फ भारत के दलितों को बल्कि विश्व के दबे कुचले समाज को अपने व्यक्तित्व से प्रभावित किया | राजनीतिक आर्थिक सामाजिक और धार्मिक रूप से मनुष्य जाति को प्रभावित करनेवाले इस युग पुरूष ने साहित्य के क्षेत्र में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है |"[५]

दलितों को शिक्षा के साधन मिले | पढ़ लिखकर अपने अधिकारों की लढ़ाई लढ़ने लगे | शिक्षित दलित युवक युवतियाँ अपने समाज जीवन की स्थिति एवम्गति के बारे में सोचने लगे | साहित्य के माध्यम से अपने एवम्अपने समाज-जीवन का चित्रण करने लगे | साहित्य के माध्यम से पीड़ित दलित समाज का अक्रोश व्यक्त

Please cite this Article as : प्रा.भोसले दत्तात्र्य रामचंद्र , दलित आत्मकथा एक सामाजिक दस्तावेज : **Indian Streams Research Journal (July ; 2012)**

होने लगा |
आत्मकथा :-

'आत्मकथा' विधा का अध्ययन करने पर निम्नलिखित बाते उभर कर आती है
१ . लेखक के जीवन की स्वयम्लिखि कहानी आत्मकथा है...
२ . स्वयम्लिखित जीवनी ही आत्मकथा है...
३ . आत्मकथा जीवन के जीए हुए क्षणों का ब्यौरा है...
४ . आत्मकथा स्वयम्का स्वलिखित इतिहास है...
५ . आत्मकथा में जीवन का आत्मनिरीक्षण एवं विश्लेषण आवश्यक है...
६ . आत्मकथा में सत्य एवम्यथार्थ का होना आवश्यक है...
७ . आत्मकथा जीवन की तस्वीर है...
८ . आत्मकथा लेखक के जीवन की दुर्बलताओं, सबलताओं आदि का संतुलित और व्यवस्थित चि{ण है...
९ . आत्मकथा जीवन चरितात्मक गद्य रूप है...

दलित आत्मकथा :-

परंपरागत आत्मकथा के ढाँचे को तोड़कर, बंधनों से बहार आ कर, नई राह स्वीकार कर दलित आत्मकथा अपनी दिशा से अग्रेसर हो रही है | जिसमें भारतीय समाज व्यवस्था में मिली दलित समाज-जीवन के सुख-दुःख एवम्आशा-निराशा के चित्रण के साथ प्रस्थापित मनुवादी व्यवस्था के विरूध्द विद्रोह का स्वर मुखर हुआ है | दलित समाज जीवन की दरिद्रता, अज्ञान, रूढि-परंपरा, दुःख- दर्द और इनसे बाहर निकलने की चाहत तथा परिवर्तन की इच्छा-शक्ति इस आत्मकथा में दिखाई देती है | दलित साहित्य में सबसे प्रभावी और यथार्थ चित्रांकन दलित आत्मकथा साहित्य में मिलता है |

दलित आत्मकथा साहित्य की शुरूवात मराठी भाषा से हुई | डॉ . बाबासाहेब आंबेडकर के महा- परिनिर्वाण के २२ साल बाद सन १९७८ में मराठी दलित लेखक दया पवार की आत्मकथा 'बलुत' नाम से प्रकाशित हुई और सन १९८0 में इसीका 'अछूत' नाम से हिंदी में अनुवाद प्रकाशित हुआ | मराठी में १00 से भी अधिक दलित आत्मकथाएँ लिखी गई है | इनमें महत्वपूर्ण आत्मकथाओं का मराठी से हिंदी में आनुवाद हुआ है जैसे- अक्करमाशी शरणकुमार लिबाले, जीवन हमारा वेबी कांबळे, छोरा कोल्हाटी का किशोर शांताबाई काले, उचक्का लक्ष्मण गायकवाड, पराया लक्ष्मण माने, ड़ेराड़ंगर दादासाहेब मोरे, भूर्लेविसरे दिन अरूण खोरे, नरकसफाई अरूण ठाकूर, तरालअंतराल शंकरराव खरात, यादों के पंछी प्र . ई . सोनकांबळे, बेरड़- भीमराव गस्ती, तीन पत्थरों का चूल्हा- विमल मोरे, धूल का पंछी यादों के पंख – एन . एम . निमगडे आदि |

इधर हिन्दी में भी दलित आत्मकथाएँ आयी हैं जिसका हिन्दी दलित साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है | सन १९९५ में मोहनदास नैमिषराय की आत्मकथा 'अपने-अपने पिंजरे भाग १' वाणी प्रकाशन से प्रकाशित हुई... इसका दूसरा भाग सन २000 में प्रकाशित हुआ है | इसके बाद ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा 'जूठन' सन १९९९ में राधाकृष्णा प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित हुई | बाद में सन १९९९ में कौशल्या बैसंत्री की 'दोहरा अभिशाप', सन २00२ में सूरजपाल चौहान की 'तिरस्कृत', फिर इसी साल माताप्रसाद की 'झोपड़ी से राजभवन', साथ ही भगवानदास की 'मैं भंगी हूँ', डॉ . डी . आर . जाटव की 'मेरा सफर मेरी मंजिल', के . नाथ की 'तिरस्कार' आदि हिन्दी दलित आत्मकथाएँ आयी है |

मराठी भाषा में सौ से भी अधिक दलित आत्मकथाएँ लिखी गयी है | परंतु हिन्दी में अभी भी गिनी चुनी आत्मकथाएँ मिलती है| दलित आत्मकथा साहित्य की मुख्य दिशा है - सामाजिक समता का निर्माण करना| जातिप्रथा के आधार पर आश्रित मनुवादी समाजव्यवस्था की अमानवीयता एवम्क्रूरता को दर्शाने हेतु दलित समाज-जीवन के दुखःदर्द, पीडा, घुटन, संत्रास का वर्णन कर ; न्याय, स्वातंत्र, समता, बंधुता इन मानव मूल्य पर अधारित समाज निर्मिति की चाहत दलित आत्मकथा में अभिव्यक्त हुई है | परंपरागत समाज मुल्यों को नकार कर, सत्य पर आधारित, विज्ञाननिष्ठ, समाजनिष्ठ, मानव न्याय अधिकार की ओर जाने का संकेत दलित आत्मकथा देती है |

भारतीय समाज व्यवस्था में स्थित दलित समाज-जीवन का सुखदुख़ आशाआकांक्षा को प्रस्तुत करने का काम दलित आत्मकथाओं ने किया | दलित समाज की विदारक दरिद्रता अज्ञान रूढ़ि परंपरा प्रस्थापित उच्च वर्ग द्वारा दी गई गालियाँ वंचना परिवर्तन की तीव्र इच्छा आदि के संमिश्र जीवन अनुभव दलित आत्मकथाओं में चित्रित हुए हैं | ग्राम एवं शहरी समाज-रचना गाँवों के बहार तिरपाल देकर रहनेवाले घुमंतू जनजातियों का विश्व आदि का चित्रांकण दलित आत्मकथाओं में हुआ है | भारतीय समाज व्यवस्था के वंचित दलित शोषित अन्याय अत्याचारग्रस्त अंध :कारग्रस्त उपेक्षित समाज का अज्ञात विश्व प्रकाश में लाने का काम दलित आत्मकथा साहित्य ने किया | भारतीय समाज संस्कृति की भयावह वास्तविकता की परते खोल कर दिखाने का काम दलित आत्मकथाओं ने किया... साथ ही परंपरागत साहित्य को अंतर्मुख होने के लिए बाध्य करने का काम दलित आत्मकथा साहित्य ने किया | कुल मिलाकर आधुनिक साहित्य में दलित संवेदना एक दलित अस्मिता के अर्थ की खोज हुई है |

दलित आत्मकथा में मुख्यतः निम्न बाते दृष्टिगोचर होती है –

१ . रोटी कपडा और मकान की मूलभूत आवश्यकता के लिए संघर्ष |
२ . दलितों के अछूत जीवन की विभिषिका अपमानित जीवन आदि के प्रति तीव्र आक्रोश |
३ . अशिक्षित अंधश्रद्धा ग्रस्त समाज-जीवन |
४ . अज्ञान दरिद्रता असाहयता |
५ . डॉ . आंबेडकर जी के विचारों का प्रभाव शिक्षित बनो संघटित बनो और संघर्ष करो |
६ . वैयक्तिकता में सामाजिकता का चित्रण |
७ . भाषाशैली की विविधता आदि |

अतः दलित आत्मकथा एक सामाजिक दस्तावेज है |

दलित आत्मकथाओं में दरिद्रता, भूख, पीडा, व्यथा-वेदना, जीवन-संघर्ष के साथ रूढि-परंपरा, रीतिरिवाज, धार्मिक विधि एवम् अंधश्रधा आदि का चित्रांकन हुआ हैं | हिन्दी और मराठी का दलित आत्मकथा एक सामाजिक दस्तावेज है | जाति व्यवस्था, संस्कृति, पीडा, वेदना आदि विविध अनुभवों द्वारा दलित चेतना को उजागर करना वर्तनमान युग की प्रासंगिकता है | राष्ट्रीय एकता, भावात्मक एकता, सामाजिक एकता आदि स्थापित करने के लिए भारतीय दलित साहित्य का अध्ययन आवश्यक है |

दलित आत्मकथा का स्वरूप परंपरागत आत्मकथा से अलग है, नविन है | फुले, शाहू, आंवेड़कर जी की प्रेरणा एवं जागरण से ही दलित आत्मकथा साहित्य आया है |वावासाहेव ने दलितों को साहित्य लिखने की प्रेरणा दी थी |मूक समाज को वाणी देने का काम हुआ |शुरू में दलित चेतना से कविता, कहानियाँ, उपन्यास, नाटक आदि साहित्य लिखे गये |परंतु दलित आत्मकथा साहित्य ने साहित्य क्षेत्र में क्रांति निर्माण की |शुरू में मराठी दलित आत्मकथा आयी, वादमें हिन्दी में |दलित समाज जीवन का यथार्थ चित्रण आत्मकथा के माध्यम से अभिव्यक्त होने लगा |डॉ.संजय मुनेश्वर इन आत्मकथाओं के वारे में लिखते है - " इन आत्मकथाओं की आत्मनिवेदन शैली वेजोड़ है |स्वयं लेखक जीता जाता है, कहता जाता है |यह आत्मकथाकार जीवन को पौढ़ होने तक राह नहीं देखता उसके पास कहने के लिए कम समय में भी वहुत कुछ है |यह वहुत कुछ अर्थातदु:ख है, वेदना है, पीड़ा है, यातना है |विषमता के कारण अभिजनों व्दारा पीसा हुआ जीवन है, क्रोध है, विद्रोह है और नकार भी |दलित आत्मकथाओं में आदर्श खड़ा करने जैसा चरित्र न भी हो किन्तु मनुष्य की प्रमुख आवश्यकता पूरी न होने के वाद भी आशावाद है |इनका जीवन उपेक्षा, वेगारी और अपमान से भरा है |अर्थात् सुख की परिभाषा जानते न हो, और दु:ख और दर्द से सदैव रिश्ता जुड़ा हुआ है... यही कारण है कि कोई भी दलित आत्मकथाकार जवानी में ही आत्मकथा लिख डालता है |और समाज से न्याय की अपेक्षा कर वाकी दिनों में जीवन के सुखस्वप्न पूरे होते हुये देखने की कल्पना करता है |"[५]

कम आयु में ही दलित आत्मकथाकारों के पास कहने के लिए वहुत कुछ है | शिक्षादिशा के कारण परिवर्तनशील युवा पीढ़ी अपने परिवर्तन के वारे में और अपने समान जीवन की दयनीय स्थिति के वारे में कहता चला जाता है | इसलिए दलित आत्मकथा युवावस्था में ही अधिकतर लिखी गयी है | इन आत्मकथाओं के केंद्र में आम दलित व्यक्ति है | जिनकी दयनीय स्थिति है, जो परिवर्तन के लिए लालायीत है |इन आत्मकथाओं की विचारधारा डॉ.वावासाहेव आंवेडकर जी की विचारधारा न्याय, स्वतं{य, समता एवम्मानव कल्याण की है |आत्मकथा कथा का उद्देश्य मानवतावाद पर आधारित मानव मूलभुत अधिकारों की रक्षा है | दलित आत्मकथा वैश्विक सामाजिक समता और मानव न्याय अधिकार की प्रेरणा, एवम् प्रोत्साहन देती है | इन आत्मकथाओं में परंपरागत मूल्य व्यवस्था का नकार है और उसके प्रति विद्रोह की भावना है |इन आत्मकथाओं में दलित, पीड़ित, वंचित, शोषित, अन्याय-आत्याचार ग्रस्त लोगों का जीवन अभिव्यक्त हुआ है |दलित आत्मकथा साहित्य सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक, राजकीय एवम्सांस्कृतिक समता चाहता है |यह साहित्य जाति, धर्म, लिंग, वंश आदि की भेद मर्यादा का नकार करता है | यह साहित्य जातिअंत की लढ़ाई लढ़ना चाहता है | वैश्विक सामाजिक समता लाना चाहाता है |

दलित आत्मकथा ने परंपरागत आत्मकथा की अवधारणा को खंडित किया है | परंपरागत आत्मकथा और दलित आत्मकथा में अंतर निम्नलिखित है -

परंपरागत आत्मकथा	दलित आत्मकथा
१.आत्मकथाकार व्यक्ति केंद्र में	१. व्यक्ति के साथ समाज केंद्र में
२.जीवन के अंतिम मोड पर सिंहावलोकन	२.युवावस्था में ही समाज-जीवन का सिंहावलोकन
३.परंपरागत समाज-जीवन का चित्रण	३.समाज-जीवन की दाहक विदारक वास्तविकता
४.परंपरागत मूल्य व्यवस्था का स्वीकार	४. परंपरागत मूल्य व्यवस्था का नकार एवम्विद्रोह
५.जातिगत दंश नहीं	५.जातिगत दंश के चित्रण
६.व्यक्तिगत जीवन आदर्श	६.व्यापक मानव मूल्य के आदर्श
७.व्यक्तिगत आदर्श प्रेरणा	७.फुले, शाहु, आंवेड़कर आदर्श एवम्प्रेरणा
८.आदर्श समाज-जीवन की स्थापना	८.परंपरागत समाज-जीवन परिवर्तन की मांग

आधुनिक पूँजीपति वैश्विकीकरण के युग में अर्थिक विषमता, सामाजिक विषमता, वांशिक विषमता, धार्मिक दहशदवाद, पूँजीवाद अधिक मात्रा में निर्मित हुआ है |विश्व में समाज भयप्रद एवम्शोषणता की ओर जा रहा है| आधुनिक तंत्रज्ञान परंपरागत उपेक्षित समाज-जीवन का जीना हराम कर रहा है |नया तंत्रज्ञान कुछ पूँजीपति वर्ग के हाथ में चला गया है |चकाचौंद एवम् भोगविलास की संस्कृति फिर से जन्म ले रही है |ग्रामीण परिवेश में दलितों की, घुमंतू जनजातियों की, आदिवासी जनजातियों की एवम्आम आदमी की स्थिति दयनीय एवम्भयप्रद है |गरीव दलितों पर अन्याय अत्याचार हो रहे है |मूलनिवासी पीछड़ी जनजातियाँ सामाजिक, अर्थिक विपन्नावस्था में है |२१ वी सदी में जानकारी तंत्रज्ञान के दरवाजे जरूर खुल गये, मगर संगणक के युग में भी गरीव दलित गरीव ही है |पूँजीपति अमीर वनता जा रहा है |सत्ताधारियों एवम्समाज को जागृत करने हेतु दलित आत्मकथा साहित्य दिशा-निर्देशन कर रहा है |"सीधे-सीधे कहे तो मनुष्य की मूर्तता दलित साहित्य का एक महत्वपूर्ण अंग है |इस प्रकार मनुष्य को मनुष्य ही मानकर चलने से मनुष्य का उद्धार हो सकता है |"[७]

मानव और समाज का सर्वांगपूर्ण विकास करना दलित साहित्य की व्यापक भूमिका है |यह साहित्य सत्य की कसौटी पर कसा हुआ विज्ञाननिष्ठ है |यह साहित्य परंपरागत जातिव्यवस्था, अंधश्रध्दा, ऊँच-नीच भाव, आदि मानव समाज के लिए कितना कलंकित कर देने वाला है, इसे दर्शाता है और उसे दूर करने का प्रयास करता है |यह साहित्य मानवीयता का स्वीकार करता है |यह साहित्य चतुर्थ वर्ण-व्यवस्था को नकार कर मानवतावादी समतामूलक व्यवस्था स्वीकार करता है |मनुष्य और वैश्विक मानवतावाद अर्थात्विश्ववंधुता का स्वीकार प्रस्तुत साहित्य करता है |जव तक संपूर्ण विश्व में आम आदमी विषमतामूलक व्यवस्था से मुक्त नहीं होता तव तक इस साहित्य के माध्यम से सामाजिक समता की लढ़ाई जारी रहेंगी |यह साहित्य विश्व एवम्मानव समाज-जीवन के कल्याण हेतु सदैव मानव जगत्को प्रेरणा एवम्स्फूर्ति देता रहेगा |

संदर्भ -

१.वीणा डॉ. श्रवणकुमार, दलित साहित्य और समसामायिक संदर्भ पृष्ठ ७४
२.वीणा डॉ. श्रवणकुमार दलित साहित्य और समसामायिक संदर्भ पृष्ठ ६८
३.परमार डॉ.अभय हिंन्दी दलित आत्मकथाएँ एक अनुशीलन पृष्ठ ५३ व ५४
४.वसाणी कृष्णावंती पी, दसवें दशक के हिन्दी उपन्यासों में दलित चेतना, पृष्ठ १६
५.परमार डॉ.अभय हिंन्दी दलित आत्मकथाएँ एक अनुशीलन पृष्ठ ५३ व ५४
६. मुनेश्वर डॉ.संजय, हिन्दी का दलित आत्मकथा साहित्य, पृ.सं.१०८-१०९
७.चौहाण डॉ.धनंजय, वणकर डॉ.धीरज भाई, भारतीय साहित्य एवं दलित चेतना, पृष्ठ ३०